NEERAJ®

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

B.H.D.C.-103

B.A. Hindi (Hons.) - 2nd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: ***Sanjay Jain,*** **M.A. Hindi, B.Ed.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

Sample Question Paper–1 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता-1

1. अमीर खुसरो का काव्य 1

2. विद्यापति का काव्य 13

3. कबीर का काव्य 26

4. जायसी का काव्य 40

5. सूरदास का काव्य 53

6. तुलसीदास का काव्य 66

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता-2

7. रहीम का काव्य 81

8. मीराबाई का काव्य 94

9. बिहारी का काव्य 111

10. घनानंद का काव्य 124

11. रसखान का काव्य 136

12. नजीर अकबराबादी का काव्य 148

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

B.H.D.C.-103

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। पहला प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) हरि जननी मैं बालक तेरा।
काहे न अवगुन बकसहु मेरा। टेक॥
सुत अपराध करत है केते।
जननी कै चित रहैं न तेते॥
कर गहि केस करै जौ घाता।
तऊ न हेत उतारै माता॥
कहै कबीर इक बुद्धि बिचारी।
बालक दुखी दुखी महतारी॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-37, 'व्याख्या 6'

(ख) जबहि दीप निअरावा जाई।
जनु कबिलास निअर भा आई॥
घन अँबराउँ लाग चहुँ पासा।
उठै पुहुमि हुति लाग अकासा॥
तरिवर सबै मलै गिरि लाए।
भै जग छाँह रैनि होइ छाए॥
मलै समीर सोहाई छाहाँ।
जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ॥
ओही छाँह रैनि होइ आवै।
हरिअर सबै अकास दिखावै॥
पंथिक जौं पहुँचै सहि घामू।
दुख बिसरै सुख होइ बिसरामू॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-50, 'व्याख्या 4'

(ग) मधुकर हमहीं क्यौं समुझावत।
बारंबार ज्ञान गीता कौ, अबलनि आगैं गावत॥
नंदनंदन बिनु कपट कथा कत, कहि कहि रुचि उपजावत।
एक चंदन जो छुधा रतत, कहि कैसैं सचु पावत॥
देखि बिचारि तुहीं जिय अपने, नागर है जु कहावत।
सब सुमननि फिरि फिरि जु निरस करि, काहैं कमल बँधावत॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-63, 'व्याख्या 7'

(घ) हीन भएं जल मीन अधीन, कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीरसनेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समुझै जड़, मीतत के पानि परै कों प्रमानै।
या मन की जु दसा, घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-134, 'व्याख्या 2'

(ङ) रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो।
मेले की सैर ख्वाहिशे बागो चमन न हो॥
भूके गरीब दिल की खुदा से लगन न हो।
सच है कहा किसी ने कि भूके भजन न हो॥
अल्लाह की भी याद दिलाती है रोटियाँ॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-155, 'व्याख्या 1'

प्रश्न 2. अमीर खुसरो के रचना-संसार पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'अमीर खुसरो का रचना-संसार'

प्रश्न 3. कबीर के काव्य सौन्दर्य पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-28, 'कबीर की भाषा और काव्य सौंदर्य', पृष्ठ-35, प्रश्न 3

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 4. जायसी के काव्य में चित्रित लोकजीवन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-42, 'जायसी के काव्य में लोकजीवन'

प्रश्न 5. तुलसीदास की भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-68, 'तुलसीदास की भक्ति'

प्रश्न 6. रहीम के भाव और कला-पक्ष का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-82, 'रहीम का काव्य सौंदर्य'

प्रश्न 7. 'रीतिसिद्ध कविता में बिहारी का स्थान अन्यतम है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-116, प्रश्न 7, पृष्ठ-119, प्रश्न 9

प्रश्न 8. घनानंद के काव्य के रूप पक्ष को उद्घाटित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-126, 'घनानंद की कविता का शिल्प पक्ष : काव्य भाषा, छंद और अलंकार'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सूरदास का वात्सल्य वर्णन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-55, 'सूरदास की भक्ति में वात्सल्य'

(ख) विद्यापति के काव्य में श्रृंगार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-14, 'विद्यापति के काव्य में श्रृंगार'

(ग) मीराबाई की विद्रोही चेतना

उत्तर–मीरा का व्यक्तित्व बड़ा प्रखर, स्वतंत्र दृढ़ एवं क्रांतिकारी भी था और साथ ही तरल-कोमल भी, मीरा के व्यक्तित्व का यही गुण उनकी पदावली में जहाँ एक ओर संतों की स्वछंदता, सांप्रदायिक भेदभावों वर्ण जाति की उपेक्षा, विधि-निषेधों, राज-मर्यादा की अवहेलना, निर्गुण का गान, रहस्य-साधन, सब प्रकार के साधु-संतों की संगति, निर्भय भ्रमण, नाथों-संतों के सहज योग, सतगुरु महिमा तथा अन्त:साधना को भक्ति तथा रहस्य-साधक का आंशिक साधन बनाना आदि बातें संत मत के प्रभाव की द्योतक हैं। दूसरी ओर मीरा की पदावली माधुर्य भाव की सगुण भक्ति से ओत-प्रोत है। उसमें रूपासक्ति, विरहासक्ति आदि नारीभक्ति की सभी आसक्तियाँ, गोपिका-भाव कृष्ण की विविध लीलाओं का गान, अवतारवाद की मान्यता, स्मार्त वैष्णवी भावना आदि ऐसी बातें हैं, जो मीरा को सगुण-भक्ति की साधिका सिद्ध करती हैं। इस सन्दर्भ में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का मत है, "उनके कुछ पदों में निर्गुण भाव की भक्ति भी मिलती है, परंतु गिरधर नागर को उद्देश्य करके लिखे गये भजनों में मीराबाई जिस प्रकार सहज और स्व-स्थित दिखती हैं, उस प्रकार इन भजनों में नहीं दिखतीं। वस्तुत: अध्यंतरित, अनभिमानसिद्ध, सहज आत्म-समर्पण का वेग जितना सगुण मार्ग के भजनों में है, उतना निर्गुण मार्ग के भजनों में नहीं है।

जिस प्रकार मीरा का व्यक्तित्व विरोध-विद्रोह तथा विनम्र समर्पण के सामंजस्य का प्रतीक है, उसी प्रकार मीरा की पदावली में सगुण-निर्गुण की दो विरोधी प्रवृत्तियों का सुखद सामंजस्य है। ये दोनों धाराएं अटपटी और बेमेल नहीं हैं, अपितु मीरा की प्रेमाभक्ति में दोनों का मणिकांचन योग है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-103, प्रश्न 14

(घ) नजीर की लोकधर्मिता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-153, प्रश्न 5

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता-1

अमीर खुसरो का काव्य

1

परिचय

खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि अमीर खुसरो सूफियाना कवि थे और ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के मुरीद थे। अमीर खुसरो की 99 पुस्तकों का उल्लेख मिलता है लेकिन सभी उपलब्ध नहीं हैं। इसके अतिरिक्त खुसरो की फुटकर रचनाएं भी संकलित है, जिनमें पहेलियां, मुकरियां, गीत, निस्बतें और अनमेलियां हैं। ये सामग्री भी लिखित में कम उपलब्ध थीं, वाचक रूप में इधर-उधर फैली थीं, जिसे नागरी प्रचारिणी सभा ने खुसरो की 'हिंदी कविता' नामक छोटी पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया था।

खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि अमीर खुसरो का पूरा नाम अबू अल हसन यामीन उद-दीन खुसरो था। उन्हें अमीर खुसरो देहलवी के नाम से भी जाना जाता है। खुसरो चौदहवीं सदी के सबसे लोकप्रिय खड़ी बोली हिंदी के कवि, शायर, गायक और संगीतकार थे। वे एक सूफी गायक और भारतीय विद्वान भी थे। वह एक रहस्यवादी निजामुद्दीन औलिया शिष्य थे, खुसरो को 'भारत की आवाज' या 'भारत का तोता' (तुति-ए-हिंद) के रूप में भी जाना गया और उन्हें 'उर्दू साहित्य का पिता' भी कहा जाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अमीर खुसरो का जीवन परिचय

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से प्रकाशित पुस्तक 'खुसरो' की हिंदी कविता में अनेक साक्ष्यों के आधार पर अमीर खुसरो के जीवन काल की अवधि 1255 ई. से 1324 ई. के बीच मानी जाती है, किन्तु 2016 ई. में प्रदीप खुसरो द्वारा लिखित पुस्तक 'अमीर खुसरो' के अनुसार यह अवधि 1253 ई. से 1325 ई. तक है। खुसरो के जीवन में बरबादी और आबादी, तबाही और तामीर, जंग और अमन, दुख और सुख जैसे पक्ष रहे। अमीर खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन महमूद तुर्किस्तान में लाचीन कबीले के सरदार थे। चंगेज खान के समय में मंगोलों के अत्याचार से परेशान होकर बलख हजारा से उस वक्त हिंदुस्तान आए, जब दिल्ली की सत्ता पर इल्तुतमिश का शासन था। अमीर सैफुद्दीन उत्तर प्रदेश के एटा जिले में गंगा किनारे पटियाली नामक गाँव में बस गए। इल्तुतमिश ने उनके सैनिक गुणों और दिलेरी से प्रभावित होकर उन्हें शाही फौज में सरदार की पदवी दे दी। सैफुद्दीन के तीसरे बेटे का नाम था–अबुल हसन यमीनुद्दीन। यही अबुल हसन अमीर खुसरो नाम से मशहूर हुए।

अमीर खुसरो की परवरिश अन्य बच्चों से भिन्न थी। उनकी माँ माया देवी उर्फ दौलत नाज उर्फ सय्यदा मुबारक बेगम राजस्थान के एक संपन्न हिंदू राजपूत परिवार से थीं। इस्लाम ग्रहण करने के बाद भी उनके घर में हिंदू रीति-रिवाजों का पालन होता था। उनके घर में गाने-बजाने का वातावरण था। इस प्रकार खुसरो के मन पर नाना के घराने और पिता के घराने का समन्वित प्रभाव पड़ा। अमीर खुसरो जब नौ वर्ष के थे, तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। तब नाना ने अमीर खुसरो की शिक्षा-दीक्षा का उत्तरदायित्व निभाया। उन्हें तीरंदाजी, घुड़सवारी और सैन्य प्रतिभाओं के साथ ही संस्कृत, 'रामायण', 'महाभारत', संगीत, फारसी, अरबी, तुर्की, 'कुरआन शरीफ', 'हदीस' आदि में महारत हासिल करने का अवसर मिला। बीस वर्ष की आयु में उन्होंने दीवान (काव्य-संग्रह) तोहफतुसिग्र अर्थात 'जवानी का तोहफा' की रचना की। उनकी रचनाओं में फारसी पद्य और गद्य में खड़ी बोली के मुहावरों का पहली बार प्रयोग मिलता है।

कम उम्र में ही वे दिल्ली की साहित्यिक दुनिया में एक उम्दा शायर के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। गजल के क्षेत्र में शेख सादी शीराजी, मसनवी के क्षेत्र में निजामी गंजवी, सूफी और नीति संबंधी काव्य क्षेत्र में खाकानी और सनाई का तथा कसीदे के क्षेत्र में कमाल इस्माइल उनके गुरु थे। उन्होंने अपने दीवान 'गुर्रतुल कमाल' (शुक्ल पक्ष की पहली कमाल की रात) में हजरत निजामुद्दीन का बहुत सम्मान से नाम लिया है।

नाना के निधन के बाद खुसरो को रोजी-रोटी की चिंता हुई; वे गयासुद्दीन बलबन के भतीजे अलाउद्दीन अख्तियारुद्दीन मोहम्मद किशली खाँ उर्फ मालिक छज्जू के पास गए, जहाँ से उन्हें सहयोग मिला, वहीं उनकी मुलाकात गयासुद्दीन बलबन के बड़े बेटे बुगरा खाँ से हुई। बुगरा खाँ ने उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हें पटियाला स्थित अपने दरबार में रख लिया। गयासुद्दीन बलबन ने बुगरा को बंगाल का हाकिम नियुक्त किया, तब उसने खुसरो को अपने साथ रखना चाहा, पर खुसरो दिल्ली लौट

www.neerajbooks.com

आए। अमीर खुसरो ने बलबन की प्रशंसा में गीत लिखे। बलबन के बड़े लड़के शहजादा नासिरुद्दीन मुहम्मद कान उन्हें मुल्तान ले गया, वहाँ वे पाँच साल तक रहे शहजादे और बलबन की मौत के बाद खुसरो अपनी माँ सय्यदा मुबारक बेगम के साथ पटियाली गाँव चले आए। बलबन के चचेरे भाई हातिम खान के यहाँ दरबारी बनने पर उन्होंने 'मसनवी अस्पनामा' का लेखन किया। इसमें 240 शेर शामिल हैं, जिनमें 180 राम, लक्ष्मण और सीता की प्रशंसा में लिखे गए हैं।

खिलजी वंश के जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी ने दिल्ली का शासक बनने पर अमीर खुसरो को अमीर की पदवी दी। 1316 ई. में सुलतान के छोटे बेटे कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी के दिल्ली की सल्तनत हासिल करने पर भी खुसरो का दरबारी शायर का दर्जा बना रहा। 1321 ई. में गयासुद्दीन तुगलक ने अवध-बंगाल फतह के लिए अमीर खुसरो को भेजा। इस बीच ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया बीमार हो गए। 1325 ई. में जब अमीर खुसरो बंगाल से दिल्ली लौट रहे थे, तभी ख्वाजा का निधन हो गया। इस घटना से अमीर खुसरो को बहुत धक्का लगा। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों और अनाथों को बाँट दी और स्वयं निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर काला कपड़ा पहन कर शोकमग्न दशा में रहने लगे, जहाँ छह महीने के भीतर उनका निधन हो गया।

अमीर खुसरो का रचना संसार

नागरी प्रचारिणी सभा (वाराणसी) के अनुसार खुसरो ने निन्यानवे पुस्तकों की रचना की, जिनमें बाईस उपलब्ध हैं। उनके वर्ण्य विषय–इतिहास, अध्यात्म, प्रेम, गाथाएँ आदि हैं। 'मसनवी किरानुस्सादैन', 'मसनवी मतलउ अनवार', 'मसनवी शोरें व खुसरू', 'मसनवी लैला मजनूं', 'मसनवी आइना-ए-सिकंदरी', 'मसनवी हश्त्वहिश्त', 'मसनवी अस्पनामा', 'मसनवी खिज्रनामा या खिज्र खाँ देवल रानी या इश्किया', 'मसनवी नुह सिपहर', 'मसनवी तुगलकनामा', 'खजायनुल्फुतुह या तारीखे अलाई', 'इंशाएखुसरू या ख्यालाते खुसरू', 'रसायलुएजाज या एजाजे खुसरवी', 'अफजालुल्फबाएद', 'राहतुल्मुजी', 'खालिकबारी', 'जवाहिरुल्बह', 'मुकाल', 'किस्सा चहार दरवेश', 'दीवान तुहफ्तुस्सग्र', 'दीवानवस्तुल्हयात', 'दीवान गर्रतुलकमाल', 'दीवानवकीय नकीय' आदि उनके प्राप्य ग्रन्थ हैं।

अमीर खुसरो की हिंदी कविता

अमीर खुसरो की हिंदी (हिंदवी) रचनाएँ हैं–

- खालिकबारी या निसाब-ए-जरीफी या मंजूम-ए-खुसरो
- दीवान-ए-हिंदवी या कलाम-ए-हिंदवी।
- तराना-ए-हिंदवी या कलाम-ए-हिंदवी
- हालात-ए-कन्हैया व किशना।
- नजराना-ए-हिंदवी।
- लुआली-ए-उमान या जवाहर-ए-खुसरवी।

अमीर खुसरो को हिंदी से कितना लगाव था इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि वे अपने को हिंदुस्तान की तूती कहते हैं और और खुद को हिंदवी भाषा की मिठास का कायल बताते हैं। हिंदवी भाषा दरअसल खड़ी बोली है। वे बहुभाषाविद थे, अतः उन्होंने अपनी कविता समेत अन्य रचनाओं में जिस हिंदी का प्रयोग किया। वह प्रारंभ से ही सामासिक बनावट के साथ आगे बढ़ी।

अमीर खुसरो की कविताओं में लोक जीवन

अमीर खुसरो में भारत की लोक संस्कृति के सभी रंग देखने को मिलते हैं। खुसरो ने वसंत, सावन, बरखा, पनघट, हिंडोला (झूला), होली, चक्की, शादी-ब्याह, विदाई, साजन, बाबुल, ईश आराधना आदि पर गीतों की रचना की। उनकी पहेलियो में लोक परंपरा की सबसे मजबूत बानगी नजर आती है। उनकी रचनाओं में दो तरह की पहेलियाँ नजर आती हैं–'बूझ पहेली' और 'बिन बूझ पहेली'। लोकरंग का एक प्रमुख अंश लोगों की जिह्वा पर चढ़ा, जिसमें खुसरो रचित आध्यात्मिक प्रभावों की सखियाँ हैं। भक्ति प्रेम के रंग के अनेक दोहे खुसरो द्वारा रचे गए हैं। लोक मन में बसे इन दोहों या साखियों की याद अभी भी नवीन है. इन दोहों के लोक आग्रह का असर रीतिकाल के बिहारी जैसे सुप्रसिद्ध रचनाकार के एक दोहे पर देखा जा सकता है–

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
ज्यौं-ज्यौं बूडे स्याम रँग त्यौं-त्यौं उज्जल होय॥

खुसरो ने संगीत की दुनिया में कव्वाली, तराना, राग यमन आदि जैसे योगदान दिए। इनमें कव्वाली लोक मन के सर्वाधिक करीब है। उनके लोक में व्याप्त मुकरियाँ और दो सखुने खूब लोकप्रिय हुए। आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ऐसी मुकरियों की रचना की, जिन्हें अत्यंत लोकप्रियता भी हासिल हुई। अमीर खुसरो ने दो सखुने भी रचे, जिनमे एक से अधिक सवाल पूछे जाते हैं, जिनका उत्तर एक ही होता है। अलग-अलग सवालों का जवाब एक ही होता है, पर उसके संदर्भों में विभिन्नता होती है। सखुन फारसी भाषा का शब्द है, उर्दू भाषा में यह सुखन भी लिखा जाता है, इसका मतलब कथन या उक्ति है। खुसरो के दो सखुने प्रश्न रूप में होते थे, जैसे–

दीवार क्यों टूटी? राह क्यों लूटी? (उत्तर–राज न था।)

अर्थात दीवार बनाने वाला राजमिस्त्री नहीं था, इसलिए दीवार टूटी। उसी तरह दूसरी ओर देश में राज न था अर्थात राजव्यवस्था नहीं थी, कानून व्यवस्था नहीं थी, अतः राह में लोगों को लूटा जा रहा था।

खुसरो ने सावन, वसंत जैसे अनुभवों पर अनेक पद्य लिखे। अमीर खुसरो के नाम से ऐसे गीत भी मशहूर हैं, जो शादी-ब्याह में गाए जाते हैं। इस तरह अमीर खुसरो की कविताएँ लोक रंग में डूबे अहसासों की सफल और सुंदर अभिव्यक्तियाँ हैं और अपने लोक अनुभवों के कारण ही उनकी कविताएँ हिंदी मन में शताब्दियों बाद भी रची-बसी हैं।

अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य

अमीर खुसरो बहुभाषाविद थे। फारसी, तुर्की और अरबी भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। उनकी प्रसिद्धि खड़ी बोली के आदि प्रयोगकर्ता के रूप में है। उन्होंने घोषणा की कि वे ऐसे भारतीय तुर्क हैं, जिनकी मातृभाषा हिंदी है। अपने दीवान 'गुर्रतुलकमाल' में उन्होंने जो कहा, उसका हिंदी अर्थ है–'मैं

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

हिंदुस्तानी तुर्क हूँ, मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ, अगर वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो हिंदवी भाषा में पूछो। मैं तुम्हें हिंदवी में अनुपम बातें बता सकूंगा। मेरे पास मिस्र की शक्कर नहीं कि अरबी में बात करूँ।'' 'हिंदवी' से तात्पर्य तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी की दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों के साथ हिंदुस्तान के कुछ अन्य क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा अथवा बोली से है। अमीर खुसरो की यह हिंदवी वास्तव में खड़ी बोली है। इसकी जड़ें संस्कृत में थीं, किंतु दिल्ली तथा उसके आसपास की अनेक भाषाओं सहित अन्य अनेक भाषाओं के शब्द भी सहजता से सम्मिलित हो गए थे। उन भाषाओं की पहचान– ब्रजभाषा, राजस्थानी, अवधी, हरियाणवी, मुलतानी, लाहौरी (पंजाबी), सिंधी, गुजराती, मराठी, अपभ्रंश आदि के रूप में दिखती है। अमीर खुसरो ने अपनी हिंदवी रचनाओं में फारसी, अरबी, तुर्की आदि के शब्दों का भी प्रयोग किया।

अमीर खुसरो के दौर में दरबारी भाषा फारसी थी और कर्मकांड की भाषा संस्कृत थी, किन्तु बोलचाल की भाषा अलग थी। 'खुसरो ने इसे हिंदवी' कहा। उन्होंने इस 'हिंदवी' पद का दो अर्थों में प्रयोग किया–दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा खड़ी बोली तथा उनके समय हिंदुस्तान में बोली जाने वाली अन्य भाषाएँ।

अमीर खुसरो की भाषा लोक के करीब है। खुसरो की भाषा के रूप अलग-अलग हैं। वे अभिधा की भाषा में कविता कहने के साथ लक्षणा और व्यंजना की भाषा की मारक क्षमता का भी बेहतरीन उपयोग करते हैं। उनकी पहेलियों में लक्षणा के बेहतरीन उदाहरण मिल जाते हैं। उसी तरह उनके आध्यात्मिक दोहों/कव्वालियों में व्यंजना शब्द शक्ति की झलक मिलती है। अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य की खूबियों के अनेक रंग हैं, जिन्हें देखकर यह समझ पाना मुश्किल हो जाता है कि यह खड़ी बोली हिंदी के बेहद प्राचीन रंग का आस्वाद है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए।

(क) अमीर खुसरो का वास्तविक नाम बताइए।

उत्तर–अमीर खुसरो का वास्तविक नाम था–अबुल हसन यमीनुद्दीन मुहम्मद। अमीर खुसरो को बचपन से ही कविता करने का शौक था। इनकी काव्य प्रतिभा की चकाचौंध में इनका बचपन का नाम अबुल हसन बिल्कुल ही विस्मृत होकर रह गया। अमीर खुसरो दहलवी ने धार्मिक संकीर्णता और राजनीतिक छल कपट की उथल-पुथल से भरे माहौल में रहकर हिन्दू-मुस्लिम एवं राष्ट्रीय एकता, प्रेम, सौहार्द, मानवतावाद और सांस्कृतिक समन्वय के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा से कार्य किया। प्रसिद्ध इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने अपने ऐतिहासिक ग्रंथ 'तारीखे-फिरोज शाही' में स्पष्ट रूप से लिखा है कि बादशाह जलालुद्दीन फीरोज खिलजी ने अमीर खुसरो की एक चुलबुली फारसी कविता से प्रसन्न होकर उन्हें 'अमीर' का खिताब दिया था उन दिनों अमीर का खिताब पाने वालों का एक अपना ही अलग रुतबा व शान होती थी।

(ख) अमीर खुसरो ने अपनी भाषा को किस नाम से पुकारा।

उत्तर–अमीर खुसरो ने अपनी भाषा को हिंदवी नाम से संबोधित किया।

(ग) अमीर खुसरो के पिता का नाम बताइए। भारत में उनका निवास कहाँ था? बताइए।

उत्तर–अमीर खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन महमूद था। वे उत्तर प्रदेश के एटा जिले में गंगा किनारे पटियाली नामक गाँव में बस गए। संयोग ऐसा हुआ कि उनकी पहुँच दिल्ली के सुलतान शमसुद्दीन इल्तुतमिश के यहाँ हो गई और उनके सैनिक गुणों और वीरता से प्रभावित होकर सुलतान ने उन्हें शाही फौज में सरदार की पदवी दे दी।

(घ) अमीर सैफुद्दीन किस कबीले से संबंधित थे और कहाँ के रहने वाले थे?

उत्तर–अमीर खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन महमूद तुर्किस्तान में लाचीन कबीले के सरदार थे। चंगेज खान के दौर में मंगोलों के अत्याचार से परेशान होकर बलख हजारा से उस वक्त हिंदुस्तान आए, जब दिल्ली की सत्ता पर कुतुबुद्दीन ऐबक के एक गुलाम शमसुद्दीन इल्तुतमिश का शासन हो चुका था।

प्रश्न 2. अमीर खुसरो के जीवन का परिचय दीजिए।

उत्तर–अमीर खुसरो अपने कालखण्ड के एक ऐसे स्फटिक हैं, जिसके एक कोण में अरब की सभ्यता है, तो दूसरे कोण में फारसी संस्कृति झलकती है, किंतु जब इस प्रिज्म की संपूर्ण आभा को एक बिंदु पर संचित किया जाये तो वह अमीर खुसरो की 'हिंदवी' बन जाती है, जो तत्कालीन भारतीयता की पहचान और खुशबू है।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन मुहम्मद था तथा इनका जन्म सन् 1262 में उत्तर प्रदेश के एटा जिले के पटियाली नामक ग्राम में गंगा किनारे हुआ था। गाँव पटियाली उन दिनों मोमिनपुर या मोमिनाबाद के नाम से जाना जाता था। इस गाँव में अमीर खुसरो के जन्म की बात हुमायूँ काल के हामिद बिन फजलुल्लाह जमाली ने अपने ऐतिहासिक ग्रंथ 'तजकिरा सैरुल आरफीन' में सबसे पहले कही। उनका परिवार कई पीढ़ियों से राजदरबार से संबंधित था। स्वयं अमीर खुसरो ने 7 सुल्तानों का शासन देखा था। लाचन जाति के तुर्क चंगेज खाँ के आक्रमणों से पीड़ित होकर बलबन के राज्यकाल में 'शरणार्थी' के रूप में भारत में आ बसे थे। खुसरो की माँ बलबन के युद्धमंत्री इमादुतुल मुल्क की पुत्री तथा एक भारतीय मुसलमान महिला थी। इनके तीन पुत्रों में अबुल हसन (अमीर खुसरो) सबसे बड़े थे। चार वर्ष की उम्र में वे दिल्ली लाए गए। आठ वर्ष की उम्र में वे प्रसिद्ध सूफी हजरत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य बने। 16-17 साल की उम्र में वे अमीरों के घर शायरी पढ़ने लगे थे। एक बार दिल्ली के एक मुशायरे में बलबन के भतीजे सुल्तान मुहम्मद को खुसरो की शायरी बहुत पसंद आई और वो इन्हें अपने साथ मुल्तान (आधुनिक पाकिस्तानी पंजाब) ले गया।

सुल्तान मुहम्मद खुद भी एक अच्छा शायर था। उसने खुसरो को एक अच्छा ओहदा दिया। मसनवी लिखवाई, जिसमें 20

www.neerajbooks.com

हजार शेर थे। पाँच साल तक मुल्तान में उनका जीवन बहुत सुख-संपन्न व्यतीत हुआ। इसी समय मंगोलों का एक खेमा पंजाब पर आक्रमण कर रहा था। इनको कैद कर हेरात ले जाया गया। मंगोलों ने सुल्तान मुहम्मद का सिर काट दिया था। दो साल के बाद इनकी शायरी का अंदाज देखकर छोड़ दिया गया। फिर वे पटियाली पहुँचे और फिर दिल्ली आए। अमीर खुसरो कैकुबाद के दरबार में भी रहे और वे भी इनकी शायरी से बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने इन्हे मुलुकशुअरा (राष्ट्रकवि) घोषित किया। जलालुद्दीन खिलजी इसी वक्त दिल्ली पर आक्रमण कर सत्ता पर काबिज हुआ। उसने भी इनको स्थाई स्थान दिया। जब खिलजी के भतीजे और दामाद अलाउद्दीन ने 70 वर्षीय जलालुद्दीन का कत्ल कर सत्ता हथियाई, तो उसने भी अमीर खुसरो को दरबार में रखा। चित्तौड़ पर चढ़ाई के समय भी अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी को मना किया, लेकिन वो नहीं माना। इसके बाद मलिक काफूर ने अलाउद्दीन खिलजी से सत्ता हथियाई और मुबारक शाह ने मलिक काफूर से।

खुसरो अत्यंत व्यवहारकुशल व बुद्धिमान व्यक्ति थे और सामाजिक जीवन की खुसरो ने कभी अवहेलना नहीं की। खुसरो ने अपना सारा जीवन राज्याश्रय में ही बिताया।

वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी, हिंदवी और फारसी में एक साथ लिखा। सच कहा जाये तो हिंदी की खड़ी बोली का आविष्कार उन्होंने ही किया और हम कह सकते हैं कि आज एक महाविराट बरगद के रूप में दिखाई देने वाले हिंदी साहित्य के वृक्ष की जड़ों में अमीर खुसरो के विचारों और प्रयासों का अमृत ही उपस्थित है, जो अपने लगभग सात सौ वर्षों की लंबी यात्रा प्रमाण दे रहा है।

अमीर खुसरो अपने अन्य साहित्य के अतिरिक्त अपनी पहेलियों और मुकरियों के लिए भी जाने जाते हैं। सबसे पहले उन्होंने ही अपनी भाषा के लिए हिंदवी का उल्लेख किया था। वे फारसी के कवि भी थे।

संगीत के क्षेत्र में भी अमीर खुसरो का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने भारतीय और ईरानी रागों का सुन्दर मिश्रण किया और एक नवीन राग शैली इमान, जिल्फ, साजगरी आदि को जन्म दिया। भारतीय गायन में कव्वाली और वाद्ययंत्र सितार को इन्हीं की देन माना जाता है। इन्होंने गीत के तर्ज पर फारसी में और अरबी गजल के शब्दों को मिलाकर कई पहेलियाँ और दोहे भी लिखे हैं।

कहा जाता है कि अपने जीवन काल में अमीर खुसरो ने सौ से अधिक ग्रंथों की रचना की, किंतु आज मात्र बीस-इक्कीस ग्रंथ ही उपलब्ध हैं।

प्रश्न 3. अमीर खुसरो की 'हिंदवी' की प्रमुख रचनाओं का परिचय दीजिए।

उत्तर–अमीर खुसरो की हिंदी कविता अमीर खुसरो की हिंदी (हिंदवी) रचनाएँ हैं–

1. खालिकबारी या निसाब-ए-जरीफी या मंजूम-ए-खुसरो–यह हिंदवी फारसी शब्दकोश है, जो काव्यमय है।

2. दीवान-ए-हिंदवी या कलाम-ए-हिंदवी–इसमें आम आदमी के लिए पहेलियाँ, ढकोसले संकलित है।

3. तराना-ए-हिंदवी या कलाम-ए-हिंदवी–इसमें आम भाषा में पहेलियों, ढकोसलों, निस्बतों, दो सुखनों, मुखम्मस, सावन, बरखा, शादी आदि गीतों, गजलों, कव्वालियों को संकलित किया गया है।

4. हालात-ए-कन्हैया व किशना–ऐसी कथा है कि गुरु निजामुद्दीन औलिया के सपने में भगवान श्री कृष्ण आए फिर गुरु ने खुसरो से कहा कि तुम हिंदवी में कृष्ण की स्तुति लिखो। गुरु के निर्देशानुसार श्री कृष्ण पर यह पुस्तक खुसरो ने तैयार की।

5. नजराना-ए-हिंदवी–सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता।

6. लुआली-ए-उमान या जवाहर-ए-खुसरवी–यह भी खुसरो की कविताओं का संकलन है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दीजिए।

(क) 'बूझ पहेली' तथा 'बिन बूझ पहेली' में अंतर बताइए।

उत्तर–अमीर खुसरो ने हिंदी साहित्य को पहेलियाँ दी हैं, जो उनसे पूर्व संस्कृत में गौढ़ रूप में थी। भारत में पहेलियों की परम्परा बहुत पुरानी है। हमारे प्राचीनतम ग्रंथ 'ऋग्वेद' में यत्र-तत्र बहुत-सी पहेलियाँ हैं। 'ब्राह्मणों', 'उपनिषदों' और कहीं-कहीं काव्यों तक में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में पहेलियों के दर्शन हो जाते हैं। पहेलियाँ मूलत: आम जनता की चीज हैं। साहित्यिक पहेलियाँ लौकिक पहेलियों का ही अनुकरण हैं। खुसरो ने भी कदाचित लोक के प्रभाव से ही पहेलियों की रचना की। इतना ही नहीं लोक प्रचलित और खुसरो की दोनों ही प्रकार की पहेलियों में कुछ तो बिल्कुल एक ही रूप में मिलती हैं। लोक साहित्य में सर्वप्रथम अमीर खुसरो ने इस प्रकार की पहेलियाँ बनाने की परंपरा प्रारंभ की। इससे पहले संस्कृत साहित्य में पहेलियाँ अत्यंत गौण रूप में प्रहेलिका के नाम से मिलती हैं।

अमीर खुसरो ने बच्चों के लिए दो प्रकार की पहेलियाँ लिखी–'बूझ पहेली' और 'बिन बूझ पहेली'। बूझ पहेली में उत्तर पहेली में ही निहित होता है, जबकि बिन बूझ पहेली में अनुमान और युक्तियों के सहारे उत्तर प्राप्त किए जाते हैं। बूझ पहेली को अंतर्पालिका और बिन बूझ पहेली को बहिर्लापिका भी कहते हैं। लोक संस्कृति की निरंतरता की गंध समेटे इन पहेलियों के महत्त्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि ये आज भी लोगों की जुबां पर ये चढ़ी हुई हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

बूझ पहेली के उदाहरण–

गोल मटोल और छोटा-मोटा,
हर दम वह तो जमीं पर लोटा।
खुसरो कहे नहीं है झूठा,
जो न बूझे अकिल का खोटा।। (उत्तर–लोटा)

श्याम बरन और दाँत अनेक, लचकत जैसे नारी।
दोनों हाथ से खुसरो खींचे और कहे तू आ री।।
(उत्तर–आरी)